

| October '16 |    |    |    |    |
|-------------|----|----|----|----|
| 3           | 7  | 11 | 19 | 25 |
| 4           | 8  | 12 | 20 | 26 |
| 5           | 9  | 13 | 21 | 27 |
| 6           | 10 | 14 | 22 | 28 |
| 7           | 11 | 15 | 23 | 29 |
| 8           | 12 | 16 | 24 | 30 |
| 9           | 13 | 17 | 25 | 31 |

| January '17 |   |    |    |    |
|-------------|---|----|----|----|
| 30          | 3 | 9  | 16 | 23 |
| 31          | 4 | 10 | 17 | 24 |
|             | 5 | 11 | 18 | 25 |
|             | 6 | 12 | 19 | 26 |
|             | 7 | 13 | 20 | 27 |
|             | 8 | 14 | 21 | 28 |
|             | 9 | 15 | 22 | 29 |

(1)

November 2016

312-654 **07**

Monday

15/7/20

B.A + B.S.G.  
हिन्दी विषय  
विषय I  
कविता काव्य

डॉ० अरविन्द केशव  
कर्मो विवेक प्रोफेसर  
हिन्दी विभागा  
सर्वोत्कृष्ट कर्मचारी,  
गढ़वाल विश्वविद्यालय

प्रश्न - बंशधरदास के काव्य में निहित  
विशेषताओं का उल्लेख करें। या  
उत्पत्ति

बंशधरदास का कविता काव्य पर प्रभाव  
पर प्रकाश डालें। उत्पत्ति

बंशधरदास का कवि परिचय प्रस्तुत करें।  
उत्तर: - साधु परमेश्वर का संत, कर्म में परिश्रम,  
हाथ में कुतूहल तथा अन्तर्म पर सतत ध्यान  
कृष्णदास बंशधरदास उन आठवीं शताब्दी  
में हैं जो मात्रा में कवि लिखने की कला  
सहित में अपनी विशेषताओं को आगे बढ़ाया  
तथा निरक्षरता के कारण अन्त  
प्रतिनिधि कवि ही नहीं। कृष्णदास सतत के आत्मिक  
में उन्हीं विद्वानों में गणित विद्वानों के संत  
की शब्द की शक्ति पर व्यक्तित्व के  
दास्य दुर्भाव सतत आगे तक ले जाने ही है।  
बंशधरदास का जन्म वर्ष 1558

डॉ० तथा विद्वान 1618 ई० में जन्मात्तव और  
कारण है जो संत आत्मा की सही अर्थ  
है। ये पाठों लंका के भी तथा दुर्गा  
संस्कृत शही बंधनदास से था। ये दिल्ली  
के रहने वाले थे पर कृष्णदास प्रेम के उन्हीं  
में रहने ही उत्पत्ति विद्वानों के कारण प्रभाव  
की शक्ति। एक शक्ति के मुताबिक -  
कर्मशः -

अ.ल. + 13-56  
प्रभात 1 दिवदीवयाना

वनेवद्यान 15/7/20

| October '16 |    |    |    |
|-------------|----|----|----|
| 1           | 2  | 3  | 4  |
| 5           | 6  | 7  | 8  |
| 9           | 10 | 11 | 12 |
| 13          | 14 | 15 | 16 |
| 17          | 18 | 19 | 20 |
| 21          | 22 | 23 | 24 |
| 25          | 26 | 27 | 28 |
| 29          | 30 |    |    |

| November '16 |    |    |    |    |
|--------------|----|----|----|----|
| 1            | 2  | 3  | 4  | 5  |
| 6            | 7  | 8  | 9  | 10 |
| 11           | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16           | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21           | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26           | 27 | 28 | 29 | 30 |

इसका प्रकाश काल आद्यकाल अ-मिमांसी और  
 मुच्यपिपासा नारीका भाव, इनकी अनादि पाका  
 व कृष्णा - मक्ति की ओर उन्कावप ह्यु और  
 वृंदावन जाकर कृष्णा मक्ति का वसंजय। इनकी  
 गुरुका नाम गौवार्द्ध विदुमिनाया था।  
 इनही प्रकाशकिका और वृंदावन वनेवद्यान  
 नामक दो पुराणों की रचना की। ये मन्त्रका  
 ही ह्यु का गौवार्द्ध विदुमिनाया की दीव्या  
 लोक कृष्णा मक्ति धारा की उन्लोक का  
 सीनाया जी के प्रकाश का रस लीला रहे।

इन्कावद्यान कृष्णा मक्ति कवि  
 थे। इनके कृष्णा अनादी ० पक्ति है। कृष्णा  
 के प्रकाशिका लक्ष्मी वनेवद्यान कृष्णा परिविहित  
 अनादी है जिसे लक्ष्मी और पुराणों में अनादी  
 और अनादि कहकर पुकारा है। पर कृष्णा  
 के इनका रूप पर वृंदावनला लक्ष्मी विसक  
 मक्ति अनादी का भाव नही है, गौवार्द्ध लक्ष्मी का का  
 है। वनेवद्यान का गौवार्द्ध का वंश लीला  
 करने धारण कृष्णा मक्ति है। वनेवद्यान उन्  
 कृष्णा पर काव्य है जिसका काव्य पर काव्य मंत्र  
 धारण में लक्ष्मी और कर्म में लीला कर्म है -  
 मौरपवका मित उन्पर वरिध है  
 गंजकी माता उन् पहिली गी ।  
 आदि पितंबर ली लक्ष्मी  
 धार गौवारा उन् मित वंश मित गी ॥

वनेवद्यान का प्रवेश  
 आपने आकाश के मंदिर के बाहरी अमिदप  
 तक ही बनी मित नही है। अन्तिक उन्का प्रवेश  
 आकाशपुर तक की है। जिस पर काव्य का  
 प्रकाशः -

|              |    |    |    |
|--------------|----|----|----|
| December '16 |    |    |    |
| 5            | 12 | 19 | 26 |
| 6            | 13 | 20 | 27 |
| 7            | 14 | 21 | 28 |
| 8            | 15 | 22 | 29 |
| 9            | 16 | 23 | 30 |
| 10           | 17 | 24 | 31 |
| 11           | 18 | 25 |    |

|             |    |    |    |
|-------------|----|----|----|
| January '17 |    |    |    |
| 30          | 2  | 9  | 16 |
| 31          | 3  | 10 | 17 |
|             | 4  | 11 | 18 |
|             | 5  | 12 | 19 |
|             | 6  | 13 | 20 |
|             | 7  | 14 | 21 |
|             | 8  | 15 | 22 |
|             | 9  | 16 | 23 |
|             | 10 | 17 | 24 |
|             | 11 | 18 | 25 |
|             | 12 | 19 | 26 |
|             | 13 | 20 | 27 |
|             | 14 | 21 | 28 |
|             | 15 | 22 | 29 |
|             | 16 | 23 | 30 |
|             | 17 | 24 | 31 |

B.A. + B.Ed.  
Rohini Hindi 4 यग 314052

बकावदान 15/7/20 Wednesday

09

पार लय और पुनराव लही पावके उरु  
परमात्मा की बकावदान की बादा के कुंज  
में पाया -

हेतु - हेतु हासि पवपा

बकावदान वातातु की लोडा अगामना

दुखी दुखी लह कुंज कुहीर में

वैदिक पालीतुत वादिका पापना

बकावदान वातातु लोडा अगामना

उनाकी अक्ति रतम लीमा के उनाक लीमा की

मारी है। बकावदान की अक्ति वाचपी रतम मारी

की पुनि पुवा की जिम में अक्ति वाचपी रतम मारी

उनाक लीमा पापन कर लीमा है। दुखी उनाक लीमा

की अक्ति ही बकावदान की अक्ति का अक्ति

है। दुखी के प्रति बकावदान का प्रेम इतना

गहरा है कि वे जन्म-जन्मान्तर तक दुखी

का वादचय प्राप्त करना चाहते हैं। पुनरी

के उनाक लीमा की अक्ति में बकावदान पापन के लिये

यदि उनाक लीमा जन्म में उन्हें पशु, पक्षी,

या जड़ पदार्थ में भी जन्म लेना पड़े

तो बकावदान की प्रकानना होगी पर पान

मय के लिये तो वे उनको उनाक लीमा की

अक्ति नहीं लेना चाहते -

मानुष ही तो लही बकावदान

लकी वातातु के लीमा के उनाक लीमा

की पशु ही तो कहां लही मारी

यकी जिम लीमा की लीमा अक्ति

पापन ही तो लही लीमा की

जो धरती कर लीमा पुनरी पापन